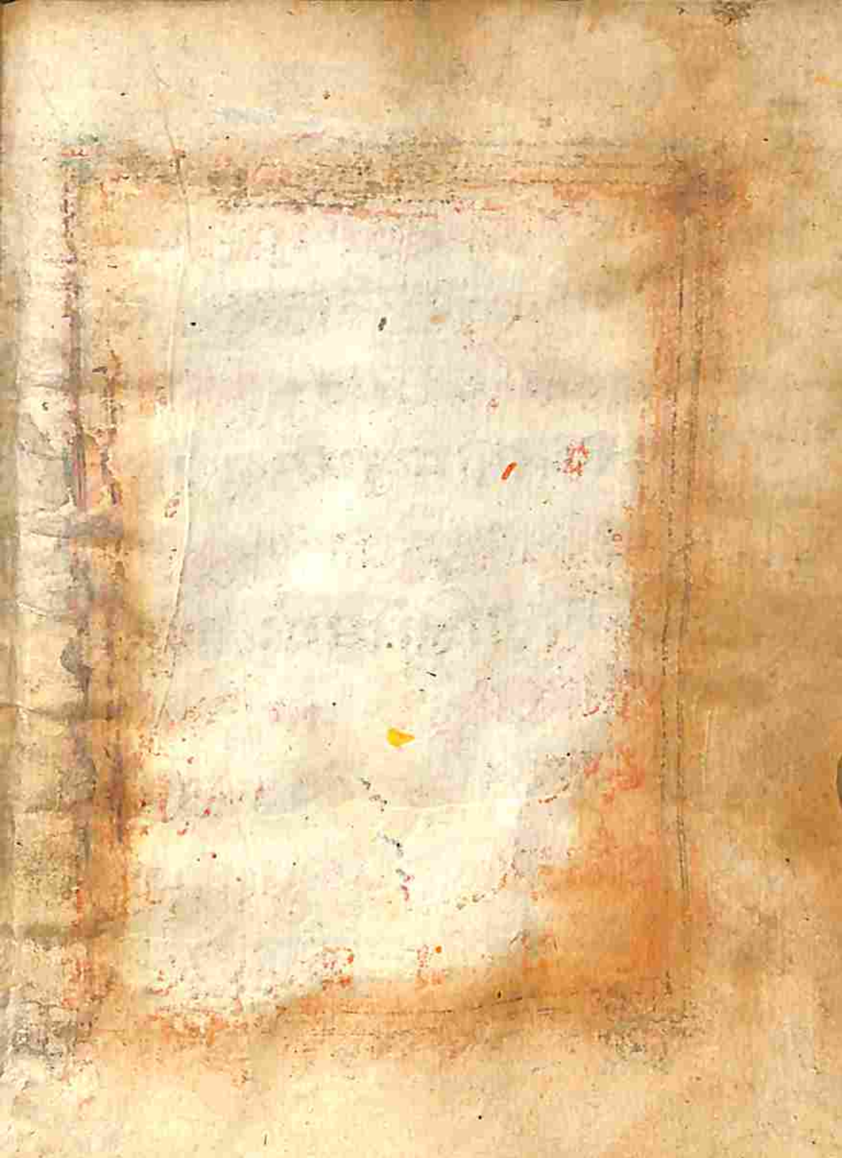


विनमैकान्वैकुण्ठामुदैवाय
वैदिकाकुलाहृ‍द्वक्षिवा रङ्गवि
धं स्रुवं मुर्यु॥ भ्रुं रन्द्रेकण
रायरभः मात्रुयघ्रुलमे॥
०॥ पजेंद्रदेवि मत्रां भ्याधि
रियमूर्धि विश्वयः॥ रंहे३
भल्लैरैक्लः संबिदाल्लपि
पे. कारवाना॥७॥ यावज्राद्रगा
गी. धःमा कास्वयतधा म्भवा
० डा॥ डवत्रमहूनंकख्रिस

[illegible]

ਸਦਸਤ੍ਰੈਰਿਗਤ੍ਰਤ੍ਰਾ।ਯਦ੍ਰਧ੍ਰੁਯ
ਸਿਮਤ੍ਰਿਰ॥ਯਾਕਿਸ੍ਰੈਕ੍ਰਧਾਸੁ
ਧਾਮੁਪ੍ਰਸਿਮਾਠਵਤ੍ਰਿਤੁ:॥੧॥ਤ੍ਰ
ਭ੍ਰਮਾਯ੍ਰਲ੍ਰਤ੍ਰਮੈਤ੍ਰਿਮਤ੍ਰ੍ਰਧ੍ਰਮਤ
ਯਤੈ॥ਤ੍ਰਪਧ੍ਰਮਤਸ੍ਰਿਵਾਕ੍ਰਾਤ੍ਰਿਵਿ।
ਬਲ੍ਰਰਮਭਾਗਭਾਤ੍ਰ॥੩॥ਤ੍ਰਸਿਰ
ਭੁਯਿਸ੍ਰਿਤ੍ਰੁਸਕ੍ਰੈਵਲਾਤ੍ਰਸਯਾਪਿ।
ਧੋ. ਸਿਤ੍ਰਭਾ॥ਮਤ੍ਰੁਸੰਭਾਰਸ੍ਰ:।ਪਤੁ:
ਗਰ ਕ੍ਰੰਯਾਤ੍ਰਿਸਾ।ਸ੍ਰਤ੍ਰ॥੩॥ਤੁਲ੍ਰੰ
੭ ਸਸਸਾਯ੍ਰਤ੍ਰਸੁਤ੍ਰਿਲ੍ਰਰਭਾਯ।

मिंडभा॥ मक्षिप्पविरुय
मोपृदहुपमिमृ॥९०॥ उपदि
मनुभिरभहूवमुभाइयाल
रभा॥ इुमुमुकारलंसुहु
सिहपह्लैवकैवला॥१००॥
रमाभेगपिरामलुमृसृडेपर
मेवरः॥ दमृडेमुभ्गरगस्मेमु
गभहुमुगाप्तिग॥१०३॥ मवे
वदिकलागतेरहमेरम
दि॥ उंपद्भुरकलाइहुं॥ मदह

ऽभवद्वत् ॥ १३ ॥ ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते
महति स्यन्दने स्थितौ । माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः ॥ १४ ॥ पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः । पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥ १५ ॥ अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः । नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥ १६ ॥

भ. गी. ३

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

यैदुः पितिभक्त्यस्ति ॥ न किञ्चि
त्पितृभक्त्या स्मान्यभक्तुपम्
स्तु ॥ ०१ ॥ यथा सुधर्मक्रतुर्ध
र्मः सर्वतस्तु मः ॥ तथा माया
विलासैर्यत्सर्वेषु गुरुस्तु मः
०२ ॥ यैद्रुः सीतलवायुहूगा
त्पितृभक्त्या ॥ सा किञ्च
त्सीवंकिलीतिवंस्मिन्त ॥
०३ ॥ यायापैतृपदपुगित्
गर्वम्भुर्भक्तः ॥ पुण्यपैतृम

ਤ੍ਰਿਪ੍ਰਿਯੇਤ੍ਰਕੁਸਿਦ੍ਧਿਸਿਦ੍ਧਿਕ੍ਰਸੰ
ਸਰ॥ਲਤਾਦ੍ਵਿਵਸ੍ਤੁਸੋਲਕੇਵ
ਲੰਬੁਫਲਪ੍ਰਸ੍ਤੁਤੇ॥ਤੁਸ॥ਤ੍ਰਕੁਸ
ਸੁਪਿਵਿਸ੍ਤੀਲਕੁਸੁਤੁਃਸਦ੍ਧਿਤੁ ਝ
ਯਃਸਿਵਃ॥ਯਸ੍ਤ੍ਰਸ੍ਮਭਕ੍ਤਵੰਗ
ਮਹਯਤੁਸ੍ਰਿਯੇਤੁਸ੍ਥਨਾ॥੩੫॥
ਮਵਸੇਕਸਿੰਦ੍ਮਾਤ੍ਰਭਾਰਿ
ਮਹਾਤ੍ਰਵਲਿੰ॥ਨਵਾਨਵਕਿ
ਸਿਦ੍ਧਕ੍ਰਸਿਤ੍ਰਿਮਹਸਾਧੀਨਵ
੩੬॥ਵਾਂਸਾਵਦਸ੍ਵਸਮਜੁ

यो.
गवा
५

लंगारवैभिमु ॥ किक्रुजम
त्वंगामरमौत्हदज़लीविंड ॥
३ ॥ रहाति त्रविधंमायत्तुंष
तह्यिहुतलं ॥ फःपायथ
मतीरैहुंमौत्हभिडहषारज
भा ॥ ३३ ॥ इतिश्रीयोगवासि
ष्ठेभोगवैराग्यप्रकरणेसमा
प्तमिदंप्रकरणं ॥ ० ॥ वसिष्ठ
[illegible] ॥ मंथमाद्धरमःमा
त्रिमत्रिमंमारमभूमः ॥ भक्ष

रेसद्रस्यांडियखाद्वीरभद
लवः॥५॥ स्त्रिद्रैस्मेधविमेधार्हं
संभार मु[illegible]पाद्रयो। वभा
राद्धूलभंसेद्रुमतविमेधंभवाः
ऊक॥६॥ पयंदिभुविकले
ङुःभुविकलदपविद्रयाग
ह्रीयडिड़तुभंभरविभारङ्ट
भम्रयः॥७॥ पविद्रुरेरभद।
डुमित्रभदपुरमृति॥ यबाउवै
वसंभारः स्त्रिग्रमवेधमूभृति॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
यो. [illegible]
गवा. [illegible]
७ [illegible]

शिवं भपितृवम् ॥ यत्र गङ्
वैरागं यत्र काविभमन्मुले ॥
८॥ यत्रैन्दश्रृङ्कि ह्रिमतिस्
किम्पितृर॥ सविनमैन्दश्री
दर्स्ममक्ष्वि रिकस्रुते ॥९॥ स्ह
ह्रारतदर्भ स्टर भमसुवस्
स्त्वन्ः ॥ उभाम्युः पूतिविमुत्ति
मम्बैक्षुट स्मः ॥१०॥ मवक्षि
क्षुम्भ स्मुभन्द है विलो
वत ॥ उत्तिविभमसुगन्धैर क्षु

मदद्मेयघा ॥ २७ ॥ ठेगाठवरा
यथाद्विवर्ड्रेदकूमवसुउः ॥ उ
येयसाउँयायाद्विवर्द्रेलगाद्वि
उरवमा ॥ ०उ ॥ भरः समदद्रुउ
उस्र्दम्मदउःपरमाद्रुवः ॥ श्रुमि
गमश्रिराकांउरद्रुउववाति
तेः ॥ ०३ ॥ यद्रुयंश्रोमेवाश्रम
गी. कुलयदिनिहमः ॥ उवेयमि
गव. कूलमीहगतिपवित्रव्रूउ ॥
१ ०२ यवादलम्भवैउलैभद्रु

मंड्रमद्रुषः ॥ ०३ ॥ यनाविमुड
गुकंसंभजसेवाड्रुमःस्लभ
ड्रुविलीपाउद्युदमतीजगि
लंगागउ ॥ ०४ ॥ सुदिदृवृरिं
केंगमद्विपैयरठविउः ॥ सुरि
टतवेउड्रसृतिचिकल्दःमउमृ
उ ॥ ०४ ॥ उनुभाडुकेवदेवपटेय
ड्रुद्विमगतिउभा ॥ सुद्गंद्गुम
वेदंउड्रुद्विशंविमगतिउभा ॥ ४० ॥
विमुवीसिविलासेयंविमुण

ये:
गवा.
३

हेमदिन ॥ विद्वीयतमते
वभहिकषमात्स्यः ॥ ३३ ॥ यथा
रेयत्विद्वः देनेह्मिदिभवत्
ताः ॥ प्रदक्षिणं विष्णुभक्त्य
विविक्तमा ॥ ३३ ॥ प्रदक्षिणा
विष्णुभक्तैर्वल्यं तु लोके ॥ म
तिल्केलले वृत्तिः कर के
ष्ठलं यथा ॥ ३४ ॥ प्रदक्षिणा क्ष
गच्छति त्वद्भक्तिं विनार्य क्ष
ष्टा मा दृशि त्वद्भक्त्या विना ।

श्री.
गी.
७

रे ॥ ३० ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
वः ॥ ३१ ॥ [illegible] पः
[illegible] पः ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३२ ॥ एवं [illegible]
हृदि भावं [illegible]
[illegible] पः
३३ ॥ इति श्री [illegible]

सि श्री यं भुक [illegible] ॥३॥ [illegible]
सिमुरु [illegible] ॥ उद्धु म रोष वै
क भूवा मा द्र्यपाव कः ॥ पु
ड्र भा णि मवेर रौं ड्रु भव
सुडि: ॥ ० ॥ सिद्ध कं य भिं म
वंलगामि ह्व ठ वयग ॥ यश्रि
भूक्षप मा तु भु भ वु फ क व मः
भाषे ॥ ७ ॥ सव डी ड्पम ल भू
ग्लेन्द्रु मि मि ग मयः ॥ यश्रि
ड्रिभमयेगी अप वय गभूरः ॥

दुरि॥ विश्वश्रुपिलमेदेपि
भेजकंदंउषाद्रक्रिशी॥ भूति
कः धुतिविद्युरपषारयाति
रहरभा॥ उह्लः कद्रदलें
उः उषारामारिरहरभा॥ उ
षउद्रापउकारिभ्रुउजिचाउ
पैयेयिमर्ता॥ पातेभुराउयाते
हंतेरुलारिवलहुडे॥ ७॥ ष
डेउभ्रुदेभुयाउविउवहुम
भंगाउ॥ यैगिरः कद्रउवातुय

शुभ्रं मधमपङ्कजागः ॥ ८ ॥ सद्दे
वमशांवामुकलेंत निरुद्ध
रवा ॥ उङ्कुकलडुंगरेपीडेमं
पद्धगांउयघा ॥ ०० ॥ उउंहुगड
वाकसंप्लुपम्यूगदिबव ॥
ह्वामम्बुखिभभयोयकुमो
विगईमयः ॥ ७ ॥ गोयदंपठि
धं वीमेनःभुगगकमभदि
हार क ममीरिक्कवांरभैगमु
०० वहुडहुडः ॥ ०३ ॥ मउःमुद्दे

वजिः शुद्रः शुद्र उभङवा।
भुजे पत्रः पलिविजिः पलिः
पलउभङवाभुमि॥ द॥ व
मिङवमिङ समुपद्दत्रवा।
भुदपिप भ पुवद्दश्रर
त्रिभमङ उत्रिकद्दड॥ प॥ नि
नुक्रिः भ उभत्रि उलीवदङः
भुठवउः॥ पनिवालि पनिवा।
॥ श्रिदशीपङवभिः दः ७१
पगडूरभयीद्रकुवभली

[illegible] ॥

१७ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

२० ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ३३

ਵਮੋਦੇਵੇਭਮਃ ਪਸ੍ਰਮਾਤਨੇਰ
ਮਕੁਤਲੇ ॥ ਅਥਾ ਮਾਂ ਅੰਹਯੇਨ
ਤਃ ਹ੍ਯਯੈਮੈਦੇ ਤ੍ਰੈਲੀ ਸ੍ਰੁਤੇ ॥੧੩॥ ਪ੍ਰ
ਵੇਤ ਮਿਦ੍ਰਾ ਵੰਦਿ ਵਿ ਕਲੈ
ਕਜ੍ਰਪਿਲਿ ॥ ਸ੍ਰਿਤੇ ਦ੍ਵਿਤ੍ਰੀਅਘ
ਨਵਾਕ੍ਰਿਵਨੂੰਕਸ਼ਬਮਤੇ ॥ ਤ੍ਮ
ਸਮੰਦਲ੍ਲਾ ਅਮਾਂਤ੍ਰੇ ਲਅਰਮੈਵ
ਤੁਂਗਾਤਅਤਃ ਪ੍ਰਨਮੇਤਮ
ਮੈਦ੍ਰ ਵਵਾਵਮਿਸ਼੍ਰੁਤੇ ॥੧੪॥ ਨ੍ਹ
... ਅਮਿਸ੍ਰਅਥੇਦ੍ਰਸ੍ਰੀ

ਚੰ
ਗਵ
੦੩

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ਪੈ.
ਗਬਾ.
੦੨

ਭੈਰੋ ਕ੍ਰਸਿੰਮਨਰਾਗਾਰਾਰਵੇਕ੍ਰ
ਲੁਤ॥ ਸੁਖਿਸੁਮਾਲਕਰੰਧੁ
ਹੂਮਾ ਗਵਿਹੂਤੋ॥ਨ॥ਧ੍ਰਸਮਧੂ
ਸ੍ਰਨਰੰਧਮੈਂਦ੍ਰਾਸ੍ਰਤ੍ਰਸ੍ਰਠਵ
ਗਤ॥ਧਸ੍ਰਵਸੁਰਿਵਸੁਡੂਤ
ਸ੍ਰੈਵਿਹੂਰਾਯਵ॥ਪ॥ਧ੍ਰਦੰਮੈ
ਦਮਿਸ੍ਰੰਤੁਕ੍ਰਾਰਤਵਸ੍ਰਤ੍ਰਕੰਮ
ਰ:॥੩ਨਠਵੈਰਮਾਤ੍ਰਾਲਵਿਸ੍ਰਾਰ
ਲਵਿਲੀਯਤੋ॥੭॥ਤੁਪਾਸ੍ਰੋਯਾਰ
ਧਤੰਜੁਯੇਕੁਤ੍ਰਵਿਵਲ੍ਰਮ॥

[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]

ਧੁਖ ਗ੍ਰਿਹਿ ਲੋਗਾ ਸਿਮਿ ਰੰਮਿ ਭਣਾ
ਲ ਪਭ ਸ੍ਰੀ ਯਥਾ॥ ਡੁਧਯਹੈਵ
ਮੈਹੁ ਤੁਹੁ ਰਮਾ ਸਾ ਪਿਸਾ ਕਿਕ੍ਰ
੧੧॥ ਸ੍ਰਤੁ ਦ੍ਰਾਣਉਯਾ ਮਚੰਮਿਡੁ
ਡ੍ਰੌ ਹਿਗ ਗਾਹੁ ਲਭਾ॥ ਦ੍ਰਫੈਤੁ
ਖਿਤੁੰ ਤੁਰਾਮ ਮਿਤਾ ਮਿਵਿਹੁਮ:
੧੨॥ ਧਦ ਰਠ ਵੋਤ ਕਿ ਖ੍ਰਿਹੁਧ
ਚੌ. ਪਾਦੈ ਧਕੁ ਪਿਧਤ॥ ਸ੍ਰੀ ਧੈਮ
ਗਕ. ਕਲੰ ਦ੍ਰਕ੍ਰਾਉਦ ਮਿੰਤੁ ਰਸਧਤ
੧੫ ੧੩ ਖਿਧਾਂ ਰਸਾ ਹੁ ਕ੍ਰਸ ਧੰ ਮਿੰਤੁ ਸੁਰ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सुधीन्द्रयशा ॥ पद्मरुद्रैः मम
ह्मलाभंस्विः द्विमुक्तं मुरः ॥ ०१
सिद्धमेकं रमङ्कि द्विलोक्तं मु
उद्भवत्रियः ॥ भूरा वाउंवम
द्रुफः भकिंलिक्वलह्लं ॥
०३ ॥ मकमवभरोद्वोलिः
भवजसिद्धिदः ॥ पद्मरुद्र वि
दलः क्लैमः भवेधांउह्ल
ग्रं. यंविता ॥ ०७ ॥ पवरेड्डुगः मु
गत. यैभलभरड्गाः द्रुवाउ ॥
०१

लब्धुं दत्तं भृत्यैर्मन: ॥ ७३ ॥ सि
द्धैर्द्धैर्लयं पारिद्धैर्म्येत्कं मा
मत: ॥ मिथुनं द्रुपदं व्रजम
तुलिनृमाप्यमभात् ॥ ७४ ॥ श्री
मरद्धं भृत्योऽभूत्तीलक्षमहौपे
मोऽभ्यां ॥ विठवेद्रुमान् वद्धः
कर्मार्जुपमेवत् ॥ ७५ ॥ इति
श्री मैनाकाभिमुख्योऽभवत्
[illegible] गमसद्धं कृष्णकाल्मभा
[illegible] श्रीविभिन्नवागा ॥ ३

श्री.
गव.
७२

ग्यभूम्यविमायंकंदंभ
भिद्भिभकः ॥ भिद्रुघह्रूभवी
स्पूर्दवमदचःभद्रुः ॥
१ ॥ विमानमदल्मिलग्रंवि
यंहैदम्बयंगाडभां ॥ व्रुणयां
विलभद्विवाडःम्रिहलड
भिव ॥ ७ ॥ विमानाङ्ह्रुद्रवि
ह्रांह्लूंड्रुविदेविद्रः ॥
लुपंड्भूत्रुवाम्रिभप्रदं
पयभयघा ॥ ३ ॥ विमानं

परिक्रु भरत वश्रुतिसुन्दरः ॥ श्र
ऊकभ्रूत वत्रीज वृक्ष विष्ण
मिवामया ॥ म ॥ किमिर्वि
श्रुभत्रिवलं किं भृषु भज मिड़ि
श्रुयभा ॥ विमलगमिरुश्रिरु
भटवरुबेङ्गगाउ ॥ प ॥ यश्रु
भोलुंद्वयंगाउं सवंब्रेफ़ेड़ि
पै. ठवगाउ ॥ वेदौड़िवा भगाउ
गाव श्रुङ्गश्रु भुभड़िद्वगो ॥ ६ ॥
०३ रभगम्भंपरिहगा श्रितुंगा

५९

ਸ੍ਰੁਤਿ ਵਿਡ੍ਹਤਸ੍ਯਾ ॥ ਪਾਲਮਦਰ
ਨਿਰੋਧੰ ਸ੍ਰੁਧਬਿੰਦੁ ਸਿਤਕਾ ਊਨ ॥
੨ ॥ ਮਾਕਸਤ੍ਰਯਸ ਕ੍ਰਯੁਧੇ
ਠਕਸਿਗਮਕੋਤ ॥ ੩ ॥ ਤਕ੍ਰਿ ਦੈਵ
ਵੇਮਾਸੇਧੂ ਧੈਧੀਮਾਂ ਪਕਾਂਕਿਯਮ ॥
੩ ॥ ਮਞ੍ਜੂਸ੍ਵਕਦਗਿਤ੍ਰ ਦ੍ਰੂਕਠਕ
ਰਕਲ੍ਹਗਾਤ ॥ ਮਧੀਰਗਸਯਕਿ
ਤ੍ਰਦ੍ਰੁਕਗਾਧੁਕਤੁਤੇ ॥ ੭ ॥ ਮ
ਫਠਕਾਰਮਣੁਗਾ ਡ੍ਰਿਧ੍ਰਫ਼ਯਾ
ਧਿਗਪਕ ॥ ਕਿੰਸ੍ਰੂਮਤੇਤੂਸ

[illegible]

[illegible]

॥ ५ ॥

॥ इति श्री योग[illegible]

अथमधातुर्भ्यकालमा

५॥ वमिष्टुउवाच॥ सुहि

विरह्निवेरत्रिवोठदेधरुरुपः

विश्वभय ॰ भेरुदंयसमष्टूरम

गीरवउ॥ ९॥ मरेविविश्ठिल

भात्रुभरैवत्रीहृपारुवाः

पभत्रुभवपवादिसवणरति

पै. वाभिउः॥ ७॥ सुपष्टूरलवि

सवा. उूभ्यिणगारिंस्मयति

७० हवारुवविदेवैभ्रिउवली

𑆑𑆳𑆩𑆷𑆫𑆳𑆨𑆛𑆨𑆛𑇆𑇓𑇆𑆤𑆴𑆫𑆵𑆢𑆼𑆮𑆴
𑆤𑆴𑆓𑆩𑆽𑆫𑇀𑆨𑆴𑆫𑇀𑆟𑆮𑆁𑆨𑆷𑆫𑇀𑆨𑆽𑆫𑇀𑆨𑆴𑆫𑇀𑆤𑆴𑆂
𑆯𑆧𑇀𑆢𑆂𑇆𑆱𑆫𑇀𑆮𑆽𑆫𑇀𑆨𑆴𑆫𑇀𑆢𑆯𑆫𑇀𑆩𑆽𑆫𑇀𑆨𑆴
𑆑𑇀𑆰𑆴𑆫𑆳𑆥𑆷𑆫𑆩𑆬𑆯𑇀𑆫𑆶𑆠𑆴𑆂𑇆𑆩𑇆𑆑𑇀𑆰
𑆢𑇀𑆮𑆼𑆥𑆳𑆫𑆷𑆑𑆶𑆝𑆤𑆴𑆫𑇀𑆨𑆴𑆫𑇀𑆢𑇀𑆮𑆑𑆶𑆮
𑆫𑆪𑆨𑆳𑇆𑆮𑆴𑆫𑆷𑆞𑆩𑆣𑆶𑆫𑆳𑆩𑆣𑆶𑆓
𑆢𑆩𑆼𑆮𑆑𑇀𑆰𑆴𑆢𑇀𑆮𑆼𑆫𑆶𑆘𑆴𑇆𑆥𑇆𑆨𑆮𑆳𑆤𑆵
𑇓𑆂𑆨𑆮𑆓𑆕𑇀𑆓𑆳𑆮𑆫𑇀𑆰𑆴𑆫𑇀𑆮𑆳𑆁𑆢𑆨𑆪𑆁
𑆨𑆴𑆝𑆂𑇆𑆪𑆢𑇀𑆮𑆶𑆢𑆱𑇀𑆩𑆴𑆢𑇀𑆮𑆼𑆫𑇀𑆨𑆴
𑆝𑆽𑆫𑇀𑆨𑆴𑆫𑇀𑆨𑆴𑆫𑇀𑆮𑆾𑆝𑆨𑆳𑇆𑇙𑇆𑆨𑆮𑆳

[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]

[illegible]

कृष्टत्रद्युतीविश्वलोविभूला
रूपः ॥ ३८ ॥ यज्ञदीप्तिद्युपः श्व
श्रुः प्रज्ञदीपयत्रयश्रुङ्गः ॥ देवता
होत्रिक्रिउदमिकलरद्रद्रमनः
रूप ॥ वज्रक्रीयोग्ययमवायुःमवज्र
उगाउसुरा ॥ सप्तवक्रावाना द्वं
उदुद्रुञ्जस्थितविश्वितुङ्गः ॥ ३९ ॥ येव
मिद्धगान्तःकृगकुयालोवैभिक्ष
वा ॥ णगविवरकेमंधुयेविभिद्धि
दकैदर ॥ ४१ ॥ वबद्धीश्रिमेदो

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
बि. [illegible]
गवा. [illegible]
३. [illegible]

क्षितिस्थितिभङ्गदः ॥३०॥ यस्मिन् [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] केवलं [illegible]
[illegible] विकल्पः ॥३१॥ इ
ति श्रीयोगवासिष्ठसारे [illegible]
[illegible]
म् ॥१॥ वसिष्ठ उवाच ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

दि.
गता.
३०

पद्दिसभयः ॥ ० ॥ कृत्तमय
मंत्रतुत्रठवेदरमंस्रुपपमं ॥
उस्नैवेकृतुमंविउभवेतमः प
रंस्रुपमं ॥ ३ ॥ मद्युयत्कुवेतु
श्लूमंभारविद्विविवे ॥ भूपक
वैरगृभासुपवीउदश्लूः मर्प
ठव ॥ ३ ॥ शनिश्चरवारः ॥ हेद
श्लभायस्कैरतुः उत्तमेमेठ
उमुडे ॥ ठवमंमत्रिभाद्द ॥ भृ
प्रिमुश्रिद्रुरुद्रुरः ॥ ० ॥ कृत्तय

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] स्मृत्वैव विमुच्यते ॥५॥ [illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥६॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥७॥ [illegible]
गी. [illegible] ॥ [illegible]
मा. [illegible] ॥ [illegible] ॥
३१ [illegible]

दवस्थितिः॥ सगुविनुविनिम्न

र्जं॥ भस्पुरूपस्थितिः पंग॥ ७॥

लोहुंवल्लचित्तैकुंमिलाय

हृदयं मायेउ॥ श्रभरस्तुंभदव

त्रिंशद्यतेकवभवद॥ ०॥ भद्दे

वद्धिदकुम स्वरूपः परमस्व

र॥ भद्दुलवेयभण्विवमवद

स्थितिवधिस्थितिः॥ ००॥ श्रपराव

भं र॥ भूमं चिह्नलिलवम्नैः

मिदिकल्लवापकेयंस्वयभाद्र

[illegible] ॥ ०६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ०७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ०८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
वि. नव. ३३ [illegible] ॥ ०९ ॥ [illegible]

चधेगीमकेवलंह्रःक्ष्ठगर्भो
०त्र॥ कृहैर्मिमैर्दैर्स्मद्भव
भाप्रेषिविस्तयातु॥ चैमद्ध्र
पिर्मिभूर्त्रेइपिठम्नविक्रयतै
३॥ मापिविद्भूयत्रैवरृयार्ह
भूमिंभत॥ वलममार्हकूउ
कठलम्भूमसाढकभ॥के
श्वजभेरुपरवृत्रवाश्रुदेवा
भूहृयमा॥ ःक्षित्रपातिवृपैभेर्क्षु
वड्रमवात्वाइषाठवेज॥३३॥अदि

चै
गवा
३८

श्री

श्रीः
गोबः
३५

भूवृ३॥ भूत्तमभूविभ्यर्द्धि३मगृ
ञ्जभाणिरक्षितीयदे॥३१॥च्छ्र
कन्मैवेदश्चिध्वाणैजह्रुर्दिवि
ना॥ संयुङ्क्षुअभाणिसूर्‌ नह
मधुकधेड॥३२॥कल्दंत्रुवा
यवैवात्तुवासुमेकड्रुमल्लवः
उपत्तुड्डमह्णामिह्रत्वाश्चिविम
रुमः दृरि॥३३॥यामितिभव
ङ्कुरतांभूतयह्रयभाङ्किली॥
डंमितिंयमृड्रवमुंप्रल्लरवम

पनाम्नुभा ॥४७॥ भोरस्मृमि
दं श्च वं यष्क्रिप्लिद्वध्न सरारारभ्रं
मरमेकृ द्मी ठ वाह्नेरेवे
पलहूते ॥३॥ यदमटंमि
वंमाते यदृत्तुलगाउस्मिकिः
मटमटविलाम स्मृअपकें
रवि संदृतिः ॥३०॥ प्रजिनिष्ठ
यरी भजि रक्ष्मड यालगजीप
निर्मेकलउसुपरा ॥ परिमष्ठ
उड भृगा श्व विलोरागीतृडः

[illegible] ॥ ३४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३५ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३६ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३७ ॥ [illegible]

श्री. गा. ३९

कावीकि ङ्क ष्णि स्थिरमवास्थिम
उषणागन्द्धफली रङ्कुबङ्क
द्धपदं गतम् ॥ ३० ॥ इति श्री
योगवासिष्ठसारे दशमः प्र
करणम् ॥ १० ॥ समाप्तो
ऽयं योगवासिष्ठसंग्रहः ग्रन्थसं
ख्या ॥ ३३५ ॥ शुभं
शुभमस्तु भवलगतम् ॥
२ ॥ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ॥
शुभं ॥ शुभं ॥ शुभं ॥ शुभम्

